English

setuu अध्याय 27

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

हनुमान जी ने प्रभु श्री राम की अयोध्या लीला का वर्णन किया

छोटे से अन्तराल के पश्चात् पवित्र पूजा पुनः शुरू हुई | इस सत्र की यजमान थी यक्षिका नामक मातंग महिला | उसकी आत्मा को पवित्र करने के लिए हनुमान जी ने निम्नांकित ज्ञान शब्द कहे :

हे मातांगो, जब भी आपको पारिवारिक जीवन तथा आध्यात्मिक जीवन में संतुलन स्थापित करने में कठिनाई हो , आपको उन घटनाओं का ध्यान करना चाहिए जो उस समय घटित हुई थी जब भगवान् राम को वनवास का आदेश मिला था | उन घटनाओं के माध्यम से प्रभु राम ने यह सन्देश दिया कि कैसे कोई व्यक्ति सांसारिक कर्तव्यों को निभाते हुए भी उनसे जुड़ा रह सकता है

वे घटनाएं त्रेता युग में हुई किन्तु मैं कलियुग में भी उन्हें प्राय: घटित होते देखता हूँ | मैं उन्हें बार बार घटित होते देखता हूँ | प्रभु राम बार बार भक्तों के जीवन से निर्वासित होते हैं |

मैं वेंकटेश नामक एक भक्त को देख रहा हूँ | वह अपने घर में बैठा राम जी की लीलाएं पढ़ रहा है | वह परम प्रभु के बहुत समीप अपने आपको अनुभव कर रहा है | एक मित्र ने अभी अभी उसके द्वार पर कदम रखा है | वह अगले कुछ घंटे उस मित्र के साथ बिताएगा | वह सांसारिक मामलो के बारे में बाते करते रहेगा और सांसारिक कार्य करता रहेगा | वह पूर्णतः माया की जकड में रहेगा | अन्य शब्दों में , राम जी उसके जीवन से निर्वासित रहेंगे |

एक पूनम नामक भक्त है | उसने अभी अभी मंदिर में दर्शन किये हैं | वह शांतिमय है | वह अपने घर में कदम रखने को है | वह देखेगी कि उसके बच्चे ने कुछ गलत कर दिया है | वह क्रोध , पश्चाताप आदि सांसारिक भावनाओं में डूबेगी और प्रभु राम उसके जीवन से पुनः निर्वासित हो जायेंगे |

एक गृहस्थ के लिए माया से दूर रहना असंभव है | भगवान् राम का मन से निर्वासन अनिवार्य हो जाता है | अयोध्या के महल में की गई अपनी लीलाओं के माध्यम से भगवान् राम ने यह दिखाया है कि कैसे कोई भक्त माया जाल में रहते हुए भी उनसे जुड़े रह सकता है |

जब राज्य में प्रभु राम का शासन होता है तो उसे रामराज्य कहते हैं | ऐसे राज्य में इच्छाएं तुरंत पूर्ण हो जाती हैं | हर नागरिक सुख चैन से रहता है | ठीक वैसे ही , जब आपकी देह , मन , विवेक , संस्कार , चित्त और आत्मा – स्व के ये 6 मुख्य घटक – प्रभु राम से जुड़े रहते हैं तब आप इच्छा करने से पहले सब कुछ पा लेते हैं | जब ये छ: घटक प्रभु राम द्वारा निर्देशित रहते हैं तब आपके जीवन में राम राज्य होता है |

जब अयोध्या में राम राज्य आने वाला था –राम जी राजा बनने वाले थे –माया ने अपना खेल खेला और वे अयोध्या से निर्वासित हो गए | मानव जीवन में भी ऐसा ही होता है | कोई भक्त इससे पहले कि इन सभी 6 घटकों को राम जी से जोड़ पाता है , माया अपना जाल फेंकती है | पहले मन-देह को वश में करती है और फिर विवेक -संस्कार को | और राम जी भक्त के जीवन से निर्वासित हो जाते हैं |

जब हनुमान जी ये शब्द बोल रहे थे तब उर्वा दर्द से अचानक चिल्लाने लगता है | सबका ध्यान हनुमान जी से भटक कर उर्वा की ओर चला जाता है | ऐसा प्रतीत हुआ कि उसको पेट में असहनीय दर्द था | हनुमान जी उसकी ओर देखते भी नहीं | वे अपना व्याख्यान चालू रखते हैं |

हे मातांगो , आप सब मेरे शब्दों को सुन रहे थे | आपकी आत्मा परम आत्मा से जुडी हुई थी | अचानक उर्वा की दर्द भरी चिल्लाहट ने आपका ध्यान भटका दिया | अब आपके मन उर्वा के बारे में विचारों से भर गए हैं | आप जानते हैं कि यह माया है | अब आपको क्या करना चाहिए ? क्या आपको उर्वा की चिल्लाहट को अनदेखा करके मुझे सुनना चाहिए या मुझे अनदेखा करके उर्वा को संभालना चाहिए? उत्तर कठिन नहीं है | आपको उर्वा की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए |

उर्वा का दर्द ख़त्म हो जाता है और सभा में सामान्यता लौट आती है |

यह भटकाव केवल कुछ क्षणों के लिए था | लेकिन कलियुग के अधिकांश भक्तो के लिए भटकाव जीवन भर चलता है | वे सांसारिक जिम्मेदारियों से इतने दबे हुए होते हैं कि उन्हें परम शक्ति से जुड़ने का समय ही नहीं मिल पाता | उनकी प्रार्थना भी उनकी सांसारिक समस्याओं पर केन्द्रित होती है | वे माया जाल में इस आशा से रेंगते रहते हैं कि एक दिन वे स्वतंत्र होंगे और मोक्ष की ओर अपनी यात्रा शुरू करेंगे | वह दिन कभी नहीं आता | राम जी की वे लीलाएं (जब वे महल से निर्वासित हुए थे) उन भक्तों के लिए प्रकाश का काम करती हैं |

उस लीला में मंथरा ने माया का किरदार अदा किया | अगर मंथरा राजा दशरथ को यह कहती – 'भरत को राजा बनाओ और राम को वन भेजो ', तो क्या वे उसकी सुनते? नहीं | लेकिन मंथरा ने जब यही बात देवी कैकेयी के जरिये कहलवाई तो राजा दशरथ के पास अनुपालन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था | इससे क्या जाहिर होता है? माया स्वयं में शक्तिहीन है | हमसे गुलामी करवाने के लिए वह उसका प्रयोग करती है जिससे हम जुड़े होते हैं , जिसमे हम विश्वास करते है , जिससे हम परिचित होते हैं | संक्षेप में , वह हमारे 'अहम्' का प्रयोग करती है | हमारा ज्ञान , हमारे विश्वास , हमारे लगाव आदि से बनता है हमारा अहम् , अर्थात मैं का भाव | इस लीला में कैकेयी ने 'अहम्' का किरदार निभाया है | मंथरा अर्थात माया कैकेयी अर्थात अहम् के बिना शक्तिहीन है |

[सेतु टिपण्णी : यहाँ पर अहम् शब्द का प्रयोग 'मैं के भाव' के लिए किया गया है न कि अहंकार की नकारात्मक भावना के लिए |]

मान लो कि आप जंगल में कही ध्यान कर रहे है | माया आपका ध्यान भंग करना चाहती है | वह आपके अहम् का जायजा लेती है और पता करती है कि आप एक विश्वास को पाले हुए हैं और वो विश्वास है : 'वृक्ष नहीं काटे जाने चाहिए | वृक्ष मूल्यवान होते हैं |' वह घटनाओं को कुछ इस तरह व्यवस्थित करती है कि आपको कोई वृक्ष काटता हुआ दिखाई देता है | आप तुरंत ध्यान से उठकर वृक्ष को बचाने चले जाते हैं | आपका वृक्ष संरक्षण में विश्वास , जो आपके अहम् का हिस्सा है , का माया ने प्रयोग किया और आपको परम सत्य से जुड़ने से रोक लिया |

आपका मन दशरथ है , अहम् (विश्वास, लगाव , ज्ञान आदि) कैकेयी है , माया अर्थात बाहरी संसार मंथरा है | अगर अहम् न हो तो बाहरी संसार आपको प्रभावित नहीं कर सकता | उदाहरणत: आपका मन किसी को वृक्ष काटते देखकर प्रतिक्रिया नहीं देगा अगर आप इस विश्वास को नहीं पाले होंगे कि वृक्ष मूल्यवान हैं और नहीं काटे जाने चाहिए | यह विश्वास आपके अहम् का हिस्सा है |

मान लो कि आप कही ध्यान कर रहे हैं और कुछ दूरी पर कोई कुछ बोल रहा है ऐसी भाषा में जिसे आप नहीं समझते हैं | वह आपके मन को प्रभावित नहीं करेगा | लेकिन अगर आपके मन को उस भाषा का 'ज्ञान' है , तो आपका मन उसे समझने लगेगा और आपका ध्यान भटक जाएगा | वह ज्ञान आपके अहम् का हिस्सा है जिसके बिना बाहरी संसार आपको प्रभावित नहीं कर सकता |

मैं आपको पूनम नामक एक भक्त के बारे में बता रहा था | वह माँ नहीं बन सकी | तो उसने एक बच्ची को गोद ले लिया और उसका नाम रखा मानसी | अब मानसी 11 साल की है | पूनम अभी अभी मंदिर से लौटी है | उसने देखा कि मानसी ने कुछ अनुशासनहीनता वाला कार्य कर दिया है | पूनम ने मानसी ने जो किया उसे सुधारा और उसे आगे से ऐसा न करने की हिदायत दी | मानसी क्रोध से बुदबुदाई – 'मैं आपसे घृणा करती हूँ , माँ|' और अपने कमरे में चली गई | एक साधारण माँ ने इन शब्दों को बच्चे के शब्द समझकर नजरअंदाज कर दिया होता | एक ऐसे बच्चे के शब्द जिसे अभी अभी उसकी प्रिये, किन्तु गलत गतिविधि से वंचित कर दिया गया हो | लेकिन पूनम के मन में अपने अच्छे माँ होने के बारे में संदेह और असुरक्षा की भावना है | इन शब्दों ने उसे तीर की तरह बींध दिया | माया ने उसकी बच्ची के मुख से वो शब्द कहलवाए किन्तु वे शब्द उसके मन को प्रभावित नहीं करते अगर उसके मन में असुरक्षा और संदेह जो उसके अहम् का निर्माण करता है , नहीं होता |

अतः आपके अहम् के बिना माया आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती | कैकेयी के बिना मंथरा कुछ नहीं कर सकती |

हर मनुष्य में अहम् की भावना होती है | इन वक्तव्यों पर ध्यान दो जो मैं विश्व भर से सुन रहा हूँ :

"परिवार सर्वप्रथम | परिवार ही मेरा जीवन है |" जिस मनुष्य में यह अहम् है उसे माया उसके परिवार में परिस्थितियां पैदा करके नियंत्रित कर सकती है |

"मैं अपने धर्म के लिए अपना जीवन दे सकता हूँ |" जिस मनुष्य में यह अहम् है उसे माया यह विश्वास दिला कर अपने वश में कर सकती है कि उसका धर्म खतरे में है |

"मेरा जीवन मानवता की सेवा में समर्पित है |" यह एक संत का वक्तव्य है जिनका जीवन आत्माओं को मोक्ष की ओर रास्ता दिखाने में समर्पित है | इस वक्तव्य में भी 'मेरा' है , अहम् है | हालांकि संत आत्माओ को माया के जाल से निकाल रहे हैं , वे खुद माया के अन्दर है | यह कुछ ऐसा ही है जैसे दूसरो को निकालने के लिए खुद खड्डे में उतरना |

जो भी सांसारिक कर्मों में लिप्त है –दूसरो को सांसारिक कामो से निकालने में मदद करना भी एक सांसारिक कार्य है –उसमे अहम् है | अहम् होना गलत नहीं है | माया की गिरफ्त में होना गलत नहीं है अगर आपको इसका आभास है और आप निकलने का प्रयास कर रहे है अथवा दूसरो को निकलने में मदद कर रहे हैं | भगवान् राम ने अपनी लीलाओं से रास्ता दिखाया |

आप भगवान् राम का ध्यान कर रहे हैं | अचानक माया अपना जाल डालती है | उदाहरांत: आप देखते हैं कि आपके परिवार को भोजन की आवश्यकता है | आपको भोजन अर्जित करने के लिए माया में रेंगना पड़ेगा | आपका मन कहता है – 'हे प्रभु ,मैं हमेशा आपका ध्यान करते रहना चाहता हूँ | मेरी पारिवारिक जिम्मेदारियां मांग करती हैं कि आप मेरे जीवन से निर्वासित हो जाएँ और मैं भोजन अर्जन के सांसारिक कार्य में लग जाऊ | मैं सांसारिक विचारों में नहीं पड़ना चाहता | मैं आपको अपने जीवन से निर्वासित नहीं करना चाहता | मेरे परिवार की भूख मिटाइए | माया द्वारा रचे गए इस विघ्न को समाप्त कीजिये ताकि मैं भक्ति में पुनः लीन हो सकूँ |'

यहाँ आपका मन ठीक वैसे ही गिडगिडा रहा है जैसे राजा दशरथ गिडगिडाये थे , 'हे राम , मैं आपको राज्य से निर्वासित नहीं करना चाहता | मुझे बलपूर्वक बंदी बना लो और राज्य ले लो | इससे कैकेयी द्वारा रची गई ये समस्या समाप्त हो जायेगी |'

राम जी ने इस प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया | माया द्वारा रचे विघ्नों को समाप्त करने के लिए गिडगिडाना अज्ञानता है | क्योंकि माया में कुछ रचने अथवा मिटाने के लिए कुछ नहीं है | सब कुछ पहले से ही है | एक दृश्य है जहाँ आपका परिवार भूखा है और दूसरा दृश्य है जहाँ आपका परिवार सुखी है | दोनों दृश्य माया में मौजूद हैं | रचने मिटाने के लिए कुछ नहीं है | आप एक दृश्य में आ गिरे हैं | आपको अपने मनवांछित दृश्य में स्वयं जाना होगा | प्रभु राम आपको रास्ता दिखायेंगे न केवल आपके मनवांछित दृश्य का बल्कि दृश्यों से परे मोक्ष का भी |

राजा दशरथ के साथ वार्तालाप के बाद राम जी देवी कौशल्या से मिलने जाते हैं | वे भगवान् विष्णु की पूजा कर रही होती हैं | जब राम जी उन्हें वनवास के बारे में बताते हैं , वे कहती हैं , 'मैं तुम्हारे साथ जाउंगी , राम|'

आपका अहम् कैकेयी है , आपका मन दशरथ और आपकी देह कौशल्या | आपकी देह मंत्र जाप कर रही है , मंदिर में ध्यान कर रही है | तब उसे पता चलता है कि कोई सांसारिक काम आया है | देह अध्यात्मिक काम अब नहीं कर सकती | अब वह प्रभु राम के पास मंदिर में नहीं रह सकती |

उसे सांसारिक कार्यो में लगना ही होगा | इसे परिवार के लिए भोजन अर्जित करना होगा | भगवान् राम आपके जीवन से निर्वासित होने वाले हैं | देह प्रभु राम से कहती है – ‘मेरे प्रिये प्रभु, मैं सांसारिक कार्यो में नहीं पड़ना चाहती | ये सब माया है | मैं आपके साथ रहना चाहती हूँ |’

देवी कौशल्या ने भी प्रभु राम से ऐसी ही प्रार्थना की थी | वे बोली – ‘राम , मैं यहाँ माया के शासन के नीचे (मन्थरा और कैकेयी के शासन के नीचे) नहीं रहना चाहती | मैं तुम्हारे साथ जाना चाहती हूँ |’

प्रभु राम नहीं माने | अपनी लीलाओं से उन्होंने उन सबको सन्देश दिया जिन्हें उनके और सांसारिक कार्यो के बीच एक को चुनना पड़ता है | उदाहरंतः आपका परिवार भूखा है | आप अपनी देह को मंदिर में प्रभु श्री राम के पास नहीं बैठा सकते | आपकी देह को सांसारिक गतिविधियों में लिप्त होकर भोजन अर्जन करना पड़ेगा |

प्रभु राम बोले – ‘माँ, आप राजा दशरथ को नहीं त्याग सकती | आपको उनके साथ रहना होगा |’

आपका मन दशरथ है | आपकी देह कौशल्या | आपकी देह को चाहिए कि मन के साथ रहे न कि प्रभु राम के पास | अगर मन ने देह के लिए सांसारिक कार्य निर्धारित किया है तो देह मंदिर में प्रभु के साथ नहीं बैठ सकती | देह को सांसारिक कार्य करना चाहिए |

प्रभु राम देवी कौशल्या को आगे बोले – ‘माता , यह वनवास 14 वर्ष में समाप्त हो जाएगा | फिर हम पुनः मिलेंगे |’

अर्थात , आपकी देह सांसारिक कर्तव्यों का निर्वहन करने के पश्चात् पुनः आध्यात्मिक गतिविधियों में लौट सकती है |

आपका चित्त लक्ष्मण है | एक आम आदमी के लिए देह , मन , विवेक, संस्कार , चित्त और आत्मा में अंतर करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि ये सब एक दुसरे से जुड़े हुए मालुम होते हैं | जब कोई “मैं” कहता है तो वह “मैं” के इन सभी 6 घटकों को संबोधित कर रहा होता है | एक गृहस्थ के लिए इन घटकों को पहचानना अत्यंत आवश्यक है | राम जी ने इसको आसान बनाने के लिए अपनी लीलाए की |

जब आप कोई शारीरिक कार्य कर रहे होते हैं , तब आपकी देह का अन्य 5 घटकों पर दबदबा होता है | आप अपनी देह को प्रमुखता से महसूस कर रहे होते हैं | जब आप कोई मानसिक कार्य कर रहे होते हैं तो आपके मन का अन्य पांच घटकों पर दबदबा होता है और आप अपने मन को प्रमुखता से महसूस कर रहे होते हैं | जब आप सही गलत का आंकलन कर रहे होते हैं तो आप तीन घटकों को प्रमुखता से महसूस करते हैं : आपका विवेक जो सही गलत का निर्णय करता है, आपका मन जो निर्णय के लिए आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराता है , और आपके संस्कार जो उस जानकारी को छानते है |

जब आप किसी की निस्वार्थ सेवा कर रहे होते हैं तो आपका चित्त अन्य घटकों पर हावी होता है | आप इसे महसूस कर सकते हैं | वह चित्त लक्ष्मण है | जब आप सांसारिक कार्य भी कर रहे हो तब भी आपका चित्त प्रभु राम में लगा होना चाहिए | लक्ष्मण राम जी के साथ होने चाहिए तब भी जब राम जी आपके जीवन से निर्वासित हो चुके हों |

आपके चित्त को प्रभु राम में लगाने के लिए आपको चित्त को देह-मन से अलग करना पड़ेगा | वह कैसे करें? प्राय : जब मनुष्य कोई सांसारिक कार्य करता है तो वह सोचता है कि वह ये सब अपने लिए कर रहा है | माया मनुष्य को हानि-लाभ आदि के विचारों में विश्वास करा देती है | वे चींटियो की भांति चीजे इकठ्ठा करते रहते हैं | उनका चित्त देह-मन का गुलाम बना रहता है | अपने चित्त को स्वतंत्र करने के लिए अपने हर कार्य को प्रभु राम को समर्पित कर दो – “हे प्रभु , मैं जानता हूँ कि मैं माया में फंसा हूँ अपने कर्म-इच्छा के कारण | मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ , कर्म-इच्छा से छुटकारा पाने , माया से छुटकारा पाने और अंततः आपसे मिलने के लिए कर रहा हूँ |’

इस तरह अगर आप सांसारिक कार्य करेंगे तो भी आपका चित्त प्रभु राम में लगा रहेगा |

इस लीला में देवी सीता आपकी आत्मा है | अगर आप सांसारिक कार्यो में फंसे हैं और प्रभु राम आपके जीवन से निर्वासित हैं तो आपकी आत्मा हमेशा प्रभु राम के साथ रहनी चाहिए | अपनी आत्मा को पहचानना आवश्यक है | अज्ञानता में मन को ही आत्मा न समझ बैठो | आप अपने परिवार के लिए भोजन एकत्र कर रहे हैं और साथ में राम नाम का जाप कर रहे हैं | आप दावा कर सकते हैं कि ऐसा करने से आप अपनी आत्मा को प्रभु राम के नजदीक रख रहे हैं किन्तु यह सत्य नहीं है | आप मन को आत्मा समझ रहे हैं |

सांसारिक कार्य करते समय आपका मन पूर्णतः काम में होना चाहिए | अगर कार्य करते समय आप राम नाम का जाप कर रहे हैं तो आप मन को काम से भटका रहे हैं |

देवी सीता के साथ अपने वार्तालाप में प्रभु राम ने वर्णन किया है कि मन को सांसारिक कार्य में और साथ ही आत्मा को उनमे रमाने से कैसा अनुभव होता है | यह जंगल में रहने जैसा अहसास होता है |

सुन्दर फूल फैले हैं हर जगह | पक्षियों की आवाजे आपके कानो के लिए सुखद संगीत पैदा कर रही हैं | ऐसा लग रहा है जैसे आप स्वर्ग में हो | आपकी देह तथा मन दृश्य का आनंद ले रहे हैं लेकिन आप उस आनंद से एक अजीब सी दूरी , अजीब सी अनासक्ति महसूस कर रहे हैं | आखिर आप इस जंगल के मालिक तो नहीं हैं | आप इस स्वर्ग के स्वामी तो नहीं है | आप महज एक यात्री हैं | ऐसा ही महसूस होता है जब आपकी आत्मा आपकी देह-मन से अलग होती है | आपके मन-देह आनंदित होते हैं किन्तु आप उदासीन रहते हैं |

आप एक भयानक जंगल से गुजर रहे हैं | कोई चीता, शेर, भालू कही से भी आकर आप पर हमला कर सकता है | आपने कुछ नहीं खाया है क्योंकि जंगल का यह भाग विषैले पौधों से भरा पड़ा है | कोई रास्ता नहीं दिख रहा है | आप काँटों पत्थरो से होकर अपना रास्ता बना रहे हैं , किसी सुरक्षित स्थान की खोज में , कुछ खाने पीने की तलाश में | आपका मन तथा देह ऐसे दर्द से गुजर रहे हैं जो शायद ही किसी मनुष्य ने झेला हो | फिर भी आप उस दर्द से एक अजीब सी दूरी महसूस करते हैं | आप अपने मन-देह के दर्द से उदासीन है | आखिर आपको यहाँ हमेशा के लिए तो नहीं रहना | आप जानते हैं कि आप जंगल के सुरक्षित भाग में पहुँच ही जायेंगे | ऐसा महसूस होता है जब आपकी आत्मा आपके देह-मन से पृथक हो गई हो |

जब आपकी देह-मन सांसारिक कार्य में लगे हो लेकिन आप उस कार्य से उपज रहे सुख अथवा दुःख से दूरी महसूस कर रहे हो तो समझ लो कि आपकी आत्मा आपके मन-देह से पृथक हो गई है और वही है जहाँ उसे होना चाहिए : परमात्मा श्री हरी के पास |

जंगल को रवाना होने से पहले अयोध्या की राजसभा में एक विचार रखा गया : क्यों नहीं देवी सीता को श्री राम जी की अनुपस्थिति में कोसल राज्य का शासक बना दिया जाए ? आखिर देवी कैकेयी ने देवी सीता का वनवास तो नहीं माँगा था | देवी सीता को शासक बनाने की राह में कोई परेशानी नहीं थी | लेकिन देवी सीता ने राज्य नहीं श्री राम जी को चुना | आपकी आत्मा को भी सांसारिक गतिविधियाँ देह-मन-विवेक -संस्कार के लिए छोड़कर श्री राम जी को चुनना चाहिए |

इस लीला में आपके संस्कार भरत है और आपका विवेक शत्रुघ्न | आपके मन को वश में करने के पश्चात् माया आपने विवेक और संस्कार को वश में करना चाहती है | अगर वह सफल हो जाती है , वह आपके जीवन में शासन करती है और श्री राम जी हमेशा के लिए आपके जीवन से निर्वासित हो जाते है |

जब राम जी अयोध्या से जा रहे थे तो दशरथ राजा बोले – 'राम , कम से कम एक और रात रुक जाओ | कल सुबह चले जाना |'

प्रभु राम नहीं माने और गृहस्थो को स्पष्ट सन्देश इस लीला के माध्यम से दिया – 'अगर आप पर कोई सांसारिक कार्य आन पड़ा है जिसके कारण आपको मुझसे अलग होना पड़ रहा है और माया में विचरण करना पड़ रहा है तो देरी मत कीजिये | आध्यात्मिक क्रिया बंद करके तुरंत सांसारिक कार्य

में जुट जाइए |’

अयोध्या के बहुत से लोग जो प्रभु राम के बहुत करीब थे , उनके साथ जंगल में चले गए | वे उनको अयोध्या वापिस लाने की जिद पकडे हुए थे | जब वे तमश नदी के पास पहुंचे तो अँधेरा हो चूका था | वे सब निंद्रा में चले गए उस स्थान से अधिक दूर नहीं जहाँ श्री राम जी विश्राम कर रहे थे |

जब वे सुबह उठे तो वे एक चमत्कार के साक्षी बने | जब उन्होंने प्रभु श्री राम को वहां नहीं पाया तो उन्होंने रथ के पहियों द्वारा छोड़े गए निशानों का अनुचरण किया | वे ख़ुशी से झूम उठे जब उन्होंने देखा कि रथ के निशान अयोध्या की और जा रहे थे | वे निशानों का अनुचरण करते हुए दौड़े | जल्द ही उन्हें रथ दिखाई दे गया जो सच में ही अयोध्या की ओर जा रहा था | यह प्रभु राम का ही रथ था | लेकिन वे जितना भी तेज दौड़ते , वे रथ को नहीं पकड़ पा रहे थे | रथ उनकी दृष्टि में रहा लेकिन भौतिक पहुँच से बाहर रहा |

जब वे नगर में पहुंचे, वे चिल्लाने लगे – ‘ये रहे हमारे प्रिय प्रभु श्री राम | वे वापिस आ गए हैं | हम उन्हें वापिस ले आये हैं |’

वे अब भी रथ को अयोध्या की गलियों से गुजरता देख रहे थे लेकिन अन्य लोग उस रथ को नहीं देख पा रहे थे | अयोध्या के लोगो ने उन्हें रोका और पूछा – ‘कहाँ हैं राम? आपको चीजे दिखाई दे रही हैं जहाँ कुछ भी नहीं है | आप पागल हो गए हैं | हमारे प्रिये राम , लक्षमण और जानकी के साथ जंगल में चले गए हैं | आप भ्रम का पीछे दौड़ रहे हैं |’

उनके होठों पर अनायास ही उत्तर आया – ‘हम भ्रम का पीछा नहीं कर रहे हैं | हम उन्हें अब भी देख सकते हैं क्योंकि हमारी आत्माएं उनके साथ हैं | हम उनके रथ को जंगल में बढ़ता देख सकते हैं जबकि हमारी देह यहाँ नगर में हैं | हे अज्ञानियों , दुःख मनाना बंद करो | वे हमसे दूर नहीं गए हैं | हमारी देह-मन को आओ पुनः सांसारिक कार्यों में लगाए और हमारी आत्मा हमारे प्रिये श्री राम के साथ रहे |’

प्रभु राम ने उन्हें तो सत्य का अहसास करा दिया था किन्तु अयोध्या में अब भी बहुत से नागरिक थे जो अब भी तनाव में थे | इस दौरान लीला जारी रही और राजा दशरथ मृत्यु को प्राप्त हो गए |

आपका मन दशरथ है | राजा दशरथ की मृत्यु यह दर्शाती है कि आपको अपने मन के दरवाजे बंद कर देने चाहिए ताकि इसमें और इच्छाएं प्रवेश ना करें |

मान लो आपको केला खाने की इच्छा हो रही है | आप एक केले के वृक्ष के पास गए और अपनी इच्छा पूरी की | जब आप वहां केलो का आनंद ले रहे थे आपको एक सहायता की पुकार सुनाई दी | जंगल में कोई आपकी सहायता मांग रहा है | क्या यह माया नहीं है? जैसे ही आपकी केला खाने की इच्छा पूर्ण हुई , एक और इच्छा पैदा हो गई है : उसकी सहायता करने की इच्छा जो पुकार रहा है |

एक विचार आपके मन में आएगा – ‘गुरुदेव हनुमान जी ने तो कहा था कि हमें अपना मन बंद कर लेना चाहिए ताकि आगे इच्छाएं प्रवेश न करें | मेरी इच्छा थी केला खाने की | अब माया एक और इच्छा पैदा कर रही है : पुकार रहे मनुष्य की सहायता करने की इच्छा | मैं अपने मन को बंद कर लेता हूँ | मैं इस सहायता की पुकार को नजरंदाज कर देता हूँ |’

यह विचार दोषयुक्त है | आपको कैसे पता कि यह मायाजाल है? यह आपको मोक्ष की ओर ले जाने का कोई दैवीय प्रारूप भी तो हो सकता है? क्या पता उस सहायता की पुकार के स्त्रोत के पास प्रभु राम आपका इन्तजार कर रहे हो? अगर आपकी आत्मा और चित्त वहां हैं जहाँ उन्हें होना चाहिए – अर्थात प्रभु राम के पास –अपनी इच्छाओ का पीछा आप कर सकते हो और वे आपको सही रास्ते पर ले जायेंगी , मोक्ष के रास्ते की ओर | लेकिन अगर आपकी आत्मा और चित्त माया की जकड में हैं तो आपकी इच्छाएं आपको माया की दलदल में फंसाती चली जायेंगी | जब मैं कहता हूँ कि अपने मन के द्वार बंद रखो , मेरा अर्थ है कि इच्छाओ को खुला प्रवेश मत दो | हर उस इच्छा को देखो जो आपके मन के द्वार से प्रवेश कर रही है | अपने चित्त और आत्मा से सलाह लो कि आपको उन्हें प्रवेश देना चाहिए या नहीं |

माया के गुलाम मत बनो | आपका संस्कार भरत है | भरत मंथरा और देवी कैकेयी की इच्छाओं के गुलाम नहीं बने | अगर आपके कर्म-इच्छा आपको सांसारिक कार्य करने के लिए बाध्य कर रहे हैं तो उन कार्यों में अपनी देह-मन-विवेक-संस्कार को लगा दो जबकि आपका चित्त और आत्मा प्रभु राम के पास रहें | अगर सुविधाओं का राज्य आपको प्रदान किया जा रहा है तो उस राज्य का शासन करो लेकिन माया के गुलाम बनकर नहीं , प्रभु राम के सेवक बनकर |

हनुमान जी ने अपनी श्री वाणी को विराम दिया और बाबा मातंग ने यजमान यक्षिका के लिए अर्पणं की प्रक्रिया प्रारंभ की |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

Everytime you click on the Green Button, it counts as "attempt". If you have not completed an attempt or if your attempt has failed, it will show below. You can contact S2G team if the amount has been deducted for the following transaction attempts:

Attempt ID	amount	Status	Help	Time	Re-try
546023	Rs. 108	Incomplete	Contact S2G Team	08/07/2017 - 05:05	Click here to try again

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print